M. A. Semester - III
Philosophy C.C - 10
Unit - V

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P. G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Verification Theory Of Meaning
(Part - IV)

Comment — उपर्युक्त विचार के विरोध में भी कहा जा सकता है कि सत्यापन विधि का यह रूप भी संतोषजनक नहीं है क्योंकि ऐसी स्थिति में दो वाक्यों का conjunction अर्थपूर्ण हो जाएगा, क्योंकि उस वाक्य से कोई भी observation statement निकाला जा सकता है। उदाहरण के लिए मान लिया जाय कि 'S' एक प्रतिदर्श है, जो कि उपर्युक्त कसौटी के अनुरूप है परन्तु इस 'S' को 'N' वाक्य से जोड़कर जबकि 'N' "Absolute is Lazy" के लिए आता है। 'S' वाक्य को simplification के आधार पर निकाल सकते हैं "S, N."

एक conjuction वाक्य है इसका पहला conjuction 'S' एक observation statement है (The Grass is Green) को conjuct कर देने से 'N' भी अर्थपूर्ण हो जाता है जबकि "Absolute is Lazy" के लिए आता है

सत्यापन विधि के उपर्युक्त त्रुटियों को देखते हुए Hempel ने लिखा है कि " I think it is unless to confirm the search for an adequate criterion of testability terms of deductive relationship to observation statement The empiricist criterion of meaning Article Positivism P. 116

Testability Criterion of Cognitive meaning

सत्यापन विधि के इस रूप के अनुसार एक वाक्य तभी अर्थपूर्ण होगा, जबकि वह दूसरे इन्द्रियानुभविक Proposition में बदला जा सके। वास्तव में यह सिद्धान्त Prof. Carnap के लेख " Testability of meaning " के द्वारा आया। यदि सत्यापन विधि के उपर्युक्त रूप को स्वीकार किया जाय, तो वे त्रुटियाँ जो इस विधि के विभिन्न रूपों में उठी उसका अन्त हो सकता है। इसके आधार पर सभी तरह के वाक्य जैसे —

" The Absolute is Lazy " इन्द्रियानुभविक भाषा में परिवर्तित नहीं हो सकता। अतः यह अर्थहीन वाक्य ही रहेगा। इस विधि के आधार पर " The Absolute is Lazy and Grass is Green " इन्द्रियानुभविक भाषा में परिवर्तित नहीं हो सकता। जिससे किसी भी

अर्थहीन पाक्य की अर्थपूर्ण होने की गुंजाइश नहीं रहती।

किन्तु महत्वपूर्ण रूप से उल्लेखनीय बात यह है कि तत्वमीमांसा सम्बन्धी Prof. A. J. Ayer के विचार मौलिक नहीं हैं। Ayer ने यह स्वीकार किया है कि विटगेन्सटाइन की रचना से उन्हें इस दिशा में प्रेरणा मिली है तथा तत्वमीमांसा के सम्बन्ध में उन्होंने जो तर्क दिए हैं वे प्रधानतः मौरित्स शिलक के लेख "Positivism and Realism" तथा रुडोल्फ कार्नप के लेख "The Elimination of metaphysics Through logical Analysis of language." पर आधारित है, किन्तु Ayer ने इसे अधिक स्पष्टता के साथ प्रकाशित किया है।